274 • जुलाई • 2009

बाल विज्ञान पत्रिका

चकमक

इस अंक में

2 हम बादलों के घर में

6 सूरज की लुका-छिपी ...

9 ले मशालें चल पड़े हैं ...

10 मशीन वाला हाथी

12 एक दवाखाना

14 द शाइनर

18 बचपन की याद रही बातों में

20 कछुआ और ...

22 मेरा पन्ना

30 वे दो पक्षी आखिर कहाँ चले गए...

32 घुड़सवार

38 बारिश में गाँव

और भी बहुत-बहुत कुछ...

आवरण : दिलीप चिंचालकर

आवरण गीत हमें विनीता जोशी के सौजन्य से मिला

एस.आई.जी/आई.सी.आई.सी.आई. बैंक के वित्तीय सहयोग से प्रकाशित।

सम्पादन
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

सहायक सम्पादक
कविता तिवारी

सम्पादकीय सलाहकार
रेक्स डी रोज़ारियो
तेजी ग्रोवर

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

डिज़ाइन
दिलीप चिंचालकर

वितरण
सुनीता सोनी

सहयोग
मिहिर
कमलेश यादव

सदस्यता शुल्क
एक प्रतिः 20.00
वार्षिकः 200.00 (व्यक्तिगत)
300.00 (संस्थागत)
तीन सालः 500.00 (व्यक्तिगत)
700.00 (संस्थागत)
आजीवनः 3000.00 (व्यक्तिगत)
4000.00 (संस्थागत)

सभी डाक खर्च हम देंगे। चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चैक से भेज सकते हैं। भोपाल के बाहर के चैक में 80.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

एकलव्य
ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर
भोपाल, म.प्र. 462016
फोनः (0755) 2671017, 2550976, 6549033
फैक्सः (0755) 2551108
chakmak@eklavya.in
circulation@eklavya.in
www.eklavya.in

हम बादलों के घर में

Ê®ú¨É±ÉÒ

ÊEòx¶ÉÒ

Ê¶É±ÉÉìxMÉ ºÉä ÊEòx¶ÉÒ VÉÉiÉä

आज सवेरे से बादल कुछ ज़्यादा ही थे। बारिश होने की उम्मीद थी। पर, यह सोहरा* या माओसिनरैम** तो नहीं जहाँ कभी दुनिया में सबसे ज़्यादा बारिश होती थी! किन्शी में एमीके की मेई (खासी भाषा में माँ) और मेसान (मौसी) घबरा रही थीं। कल फुटबॉल मैच में किन्शी की टीम जीत तो गई लेकिन गोलकीपर भैया की जर्सी, निकर वगैरह कीचड़ में बिलकुल लथपथ हो गए थे। तो चलते हैं, छोटी-सी पहाड़ी नदी की ओर....

साबुन घिसो, कपड़ों को छपछपाओ, खँगालो! और काले चमकीले पत्थरों पर बिछा दो...

¤ÉÉnù±ÉÉå EòÉ

¨ÉÉ+ÉäÊºÉxÉ®èú¨É
EòÒ ½þÊ®úªÉÉ±ÉÒ

फिर एमीके भागी सड़क के उस पार खाने की दुकान की ओर। आज स्कूल की छुट्टी। न जाने आज कौन आएगा? कहाँ से आएगा...? पाइन की लकड़ी जलाई.. चूल्हा तैयार किया। चावल साफ किए और देगची चढ़ा दी। माई बाँस का अचार निकाल रही है और मेसान माँस पका रही है। गिलास को सूखे कपड़े से चमकाया...। वाह! आ गए मेहमान। दूर-दूर तक सफर करने वाले लोग जा रहे थे कैलांग पहाड़ ... उन्हें खाना तो चाहिए ही, गाना भी तो चाहिए!

+ÉMÉ ¨Éå ¨ÉÉÄºÉ EòÉä
vÉÖ+ÉÄ näùiÉÒ B¨ÉÒEäò

ÊEòx¶ÉÒ ¨Éå
+{ÉxÉÒ ¨ÉÉÄ
EòÉä JÉÉxÉÉ
{ÉEòÉxÉä ¨Éå
¨Énùnù Eò®úiÉÒ

एमीके काम में तो बड़ी तेज़ है पर, अजनबियों से ज़रा शर्माती है। फिर भी वह एक दो पँक्तियाँ गाती है।

इतने में पता नहीं कहाँ से इतने सारे बच्चे और बड़े आ जुटे। सफर करने वाली दीदी लोगों के साथ-साथ सब गाने लगे...

को सिम बारिट इया थुह न्गा
कुमनो फी इम बारोह शिरटा
ही सॉ अइओम हाबा रंग ने स्लाप
फी क्मेन ने जॉ उमम्ट
को सिम बारिट इया थुह न्गा
ही सॉ अइओम हाबा रंग ने स्लाप
बैन रवाइ इरोह हा कि सॉ अइओम
इयू बली नॉन्गथॉ जुनोम

ओ, नन्हे पंछी बताओ तो मुझे
कैसे गुज़ारते हो तुम अपना जीवन
चारों मौसमों से, बारिश और धूप से
तुम खुश हो या कि दुख से भरे लेकिन
सारे मौसमों में गाते हो यूँ ही
प्रशंसा के गीत उनके
जिन्होंने बनाई है
यह दुनिया।

एक चश्मे वाली दीदी ने पूछा, "एमीके, क्या तुम यह गाना जानती हो? हमने बचपन में इसे सीखा था..."

को सिम बारिट इया थुह न्गा
कुमनो फी इम बारोह शिरटा

ÊEòx¶ÉÒ ¨Éå ºÉ¤É

*सोहराः खासी भाषा में चेरापूँजी को सोहरा कहा जाता है। कुछ समय पहले तक दुनिया भर में सबसे ज़्यादा बारिश चेरापूँजी में ही होती थी।
**माओसिनरैमः अब इस जगह पर सबसे ज़्यादा बारिश होती है।

फोटोः पदमाक्षी पटवारी और किरशन बोरलांग